9

भीड़ की प्रशंसा की इच्छा करना

(मत्ती 6:1-4)

मत्ती 5 में यीशु ने अपने चेलों की अगुआई के लिए पहले मूल नियम बताए और फिर उन्हें समझाया। अध्याय 6 और 7 में ज़ोर दैनिक मसीही जीवन के जुड़े मसलों पर है। डी. मार्टिन लॉयड जोन्स ने लिखा है कि यह पाठ ''बच्चों के अपने पिता के सम्बन्ध की तस्वीर है जिसमें वे जीवन नामक यात्रा पर अपने मार्ग पर चलते हैं।''[1] यह पाठ यीशु के चेले के रूप में जीने के ढंग पर इस नये ज़ोर का परिचय देगा।

इस और अगले दो पाठों में हम अध्याय 6 की पहली अठारह आयतों का अध्ययन करेंगे। ये आयतें पहाड़ी उपदेश का नया विभाजन हैं। पर उन्हें यीशु की कही पहली बातों से अलग नहीं किया जा सकता। पिछले भाग में उसने ज़ोर दिया था कि गलत सोच गलत कर्म जितनी ही बुरी है (5:22क, 28)। इन आयतों में उसने एक कदम आगे बढ़कर ध्यान दिलाया कि गलत सोच सही कर्म को भी गलत बना सकती है। यहां हमें पहले विभाजन[2] जिसमें हमें चुनौती दी गई थी कि ''इसलिए चाहिए कि तुम सिद्ध बनो जैसा तुम्हारा स्वर्गीय पिता स्वर्ग है'' (5:48), के अन्त तक एक सम्बन्ध भी मिल सकता है। शायद यीशु के कहने का अभिप्राय था कि ''तुम जहां तक भी सिद्धता पा लो, इसे मनुष्यों को दिखाने के लिए न करो कि वे देखकर तुम्हारी वाह वाह करें।''

विशेषकर 5:20 और इस नये भाग में एक सम्बन्ध दिखाई देता है। मत्ती 5:20 में यीशु ने कहा, ''क्योंकि मैं तुमसे कहता हूं, यदि तुम्हारी धार्मिकता शास्त्रियों और फरीसियों की धार्मिकता से बढ़कर न हो, तो तुम स्वर्ग के राज्य में कभी प्रवेश करने न पाओगे।'' अध्याय 5 के अधिकतर भाग में चुनौती गलत कामों के साथ-साथ गलत विचारों से रक्षा करने में शास्त्रियों और फरीसियों की गलत धार्मिकता से बढ़कर होने की है। मत्ती 6:1-18 में सही कामों के लिए सही मंशा रखने के सम्बन्ध में अपने चेलों के लिए उसकी चुनौती शास्त्रियों और फरीसियों की धार्मिकता[3] से बढ़कर रखने की है।

यह पाठ मुख्यतया मत्ती 6 की पहली चार आयतों पर होगा, पर यह पूरे भाग के परिचय का भी काम करेगा (आयतें 1-18)। मैं इस पाठ को ''भीड़ की प्रशंसा की इच्छा करना'' नाम दे रहा हूं। इस शीर्षक का कारण पाठ में आगे चलकर स्पष्ट हो जाएगा।

एक चेतावनी (मत्ती 6:1)

एक अनुपयुक्त कारण

हमारा पाठ एक सावधानी के साथ आरम्भ होता है: ''सावधान रहो! तुम मनुष्यों को दिखाने के लिए अपने धर्म के काम न करो, नहीं तो अपने स्वर्गीय पिता से कुछ भी फल न पाओगे''

(आयत 1)। ''धर्म'' (*dikaiosune*) का इस्तेमाल यहां 5:20 की तरह, उसकी बात करने के लिए किया गया है, जो सही है। ''सही करना'' के तीन उदाहरण हैं: निर्धनों को देना (6:2), प्रार्थना करना (आयत 5) और उपवास रखना (आयत 16)।

यीशु ने धर्म के काम ''मनुष्यों को दिखाने'' के लिए करने के विरुद्ध चेतावनी दी। कुछ लोग इन शब्दों को 5:16 में उसके निर्देशों के विपरीत देखते हैं: ''उसी प्रकार तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के सामने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में है, बड़ाई करें।'' परन्तु दूसरों को *दिखाने* के लिए और दूसरों द्वारा *देखे जाने* के लिए कुछ काम करने में अन्तर है। 5:16 और 6:1 में मूल अन्तर प्रेरणा का है: 5:16 में लक्ष्य परमेश्वर की महिमा करना है जबकि 6:1 में लक्ष्य अपनी महिमा करना है।

अस्वीकार्य धर्म

6:1 के अगले तीन उदाहरणों में यीशु ने अपने धर्म के काम मनुष्यों को दिखाने के लिए करने वालों को चिह्नित करने के लिए ''कपटी'' शब्द का इस्तेमाल किया (आयतें 2, 5, 16)। अनुवादित शब्द ''कपटी'' के लिए अंग्रेज़ी शब्द ''hypocrite'' (*hupokrites*) का इस्तेमाल पहली सदी में अपने मुंह पर मुखौटा लगाए मंच पर कलाकार के लिए किया जाता था। यीशु ने उस शब्द का इस्तेमाल उसके लिए किया जो अपने वास्तविक स्वभाव को छिपाने के लिए आत्मिकता का मुखौटा इस्तेमाल करता है।

ये आत्मिक नाटक कलाकार दिखने में भले काम करते थे, जबकि वास्तव में वे अभिनय कर रहे होते थे। उनमें नाटकीय होने की चमक थी। भीड़ के इकट्ठा होने पर तुरहियां बजवाने के बाद वे निर्धनों में बांटते थे (आयत 2)। प्रार्थना करते समय वे सार्जनिक स्थलों में हाथ और मुंह ऊपर की ओर उठाकर नाटकीय ढंग से खड़े होते और लम्बी-लम्बी और ज़ोर-ज़ोर से प्रार्थना करते थे (आयतें 5, 7)। उपवास रखने पर वे बड़े दुखी व्यक्ति वाला लिबास पहनते और मेकअप करते ताकि लोगों को प्रभावित कर सकें कि वे कितने भक्त हैं।

आयत 1 में ''दिखाने'' के लिए शब्द का अनुवाद यूनानी शब्द *theaomai* से किया गया है जो *theatron* शब्द से मिलता है जिससे हमें अंग्रेजी शब्द थियेटर मिला है।[4] कपटियों का मंच संसार था और उनके श्रोता लोगों की भीड़। उनका लक्ष्य वही था, जो हर अभिनय करने वाले की इच्छा होती है कि सुनने वाले उनकी तारीफ़ करें। स्पष्टतया उन्हें यह वाह- वाह मिलती भी थी, पर उन्हें केवल यही मिलना था। उदाहरण के अन्त के निकट, यीशु ने कहा, ''... वे अपना प्रतिफल पा चुके'' (आयतें 2, 5, 16)। ''वे ... पा चुके'' शब्दों का अनुवाद *epecho* से किया गया है, जो एक वाणिजायिक शब्द है जिसका अर्थ ''पूरी राशि लेना और इसकी रसीद देना'' है।[5] उनका अभिन्य खत्म हो जाने और सांसारिक तारीफ़ खत्म हो जाने पर परमेश्वर ने उनके जीवनों के रिकॉर्ड पर ''पूरी रकम चुका दी'' लिख देना था। उन्हें केवल इतना ही मिलना होता था। यीशु ने कहा, ''...अपने स्वर्गीय पिता से कुछ भी फल न पाओगे।'' कितने बुरे शब्द हैं! अनन्त प्रतिफल का स्थान उनके सांसारिक दावे ने ले लिया है।

हमारे पास मुनष्य जाति के दिखाई देने वाले श्रोता और अपने ''पिता जो छिपकर देखता है'' (आयतें 6, 18) के दिखाई न देने वाले श्रोता हैं। NEB में आयत 1 का अनुवाद इस प्रकार है:

''सावधान रहो कि अपने धर्म को लोगों के सामने न दिखाओ! यदि तुम ऐसा करते हो तो स्वर्ग में अपने पिता के घर में कोई प्रतिफल तुम्हारी राह नहीं देखता।''

एक उदाहरण (6:2-4)

सामान्य चेतावनी देने के बाद यीशु ने तीन उदाहरण दिए जो ''यहूदी भक्ति के तीन मुख्य कार्य'' हैं।[6] सुझाव दिया गया है कि ये तीनों हमारे धर्म के मूल ढंगों से सम्बन्धित हैं: दूसरों के प्रति (परोपकार से सहायता), परमेश्वर के प्रति (प्रार्थना) और अपने पति (आत्म-इनकार)। प्रत्येक उदाहरण में एक ही नमूना है कि यीशु ने समझाया कि इन कामों के लिए कौन सा प्रतिफल मिलेगा।

आइए अब पहले उदाहरण को देखते हैं। अन्य दो उदाहरणों को अगले दो पाठों में देखेंगे।[7]

निर्धनों की सहायता कैसे *न* करें (आयत 2)

पहला उदाहरण निर्धनों की सहायता करना है। ''यहूदी व्यक्ति के लिए दान देना धार्मिक कर्त्तव्यों में से पवित्र माना जाता है।''[8] यीशु ने कहा, ''इसलिए जब तू दान करे, तो अपने आगे तुरही न बजवा, जैसा कपटी, सभाओं और गलियों में करते हैं, कि लोग उनकी बड़ाई करें। मैं तुम से सच कहता हूं, वे अपना प्रतिफल पा चुके'' (आयत 2क)। KJV में ''निर्धनों को देने'' के बजाय ''दान'' करने की बात है।[9] आयत 2 में यूनानी शब्द *eleemosune* का अर्थ ''दया दिखाना'' है।[10] इसका इस्तेमाल सामान्य ढंग में परोपकार के कार्यों के लिए किया जाता था, और विशेषकर निर्धनों[11] की सहायता करने के लिए। यह धन या कोई और सहायता हो सकता है; इस शब्द में जो भी आवश्यक था, वह समा जाता है।

पुराना नियम निर्धनों को देने पर बहुत ज़ोर देता है। मूसा के द्वारा, परमेश्वर ने कहा था, ''तेरे देश में दरिद्र तो सदा पाए जाएंगे, इसलिए मैं तुझे यह आज्ञा देता हूं कि तू अपने देश में अपने दीन-दरिद्र भाइयों को अपना हाथ ढीला करके अवज्य दान देना'' (व्यवस्थाविवरण 15:11)। भजन संहिता की पुस्तक में, उस व्यक्ति का वर्णन जो प्रभु से डरता है, इस प्रकार किया गया है, ''उस ने उदारता से दरिद्रों को दान दिया, उसका धर्म सदा बना रहेगा और उसका सींग महिमा के साथ ऊंचा किया जाएगा'' (भजन संहिता 112:9)।

यही ज़ोर नये नियम में मिलता है। यीशु ने धनवान हाकिम से कहा, ''... जा अपना माल बेचकर कंगालों को दे'' (मत्ती 19:21)। जक्कई के घर में यीशु के जाने के बाद, उसने कहा, ''हे प्रभु, देख, मैं अपनी आधी संपत्ति कंगालों को देता हूं'' (लूका 19:8)। प्रेरितों ने पौलुस और बरनबास ''कंगालों की सुधि'' लेने को कहा, जो कि पौलुस ने कहा कि वह ''करने का मैं आप भी यत्न कर रहा था'' (गलातियों 2:10)। मकिदुनिया और अखया के लोगों को यह ''अच्छा लगा कि यरूशलेम के पवित्र लोगों ने निर्धनों के लिए कुछ चंदा करें'' (रोमियों 15:26)। परोपकार कलीसिया को मसीह द्वारा दी गई जिम्मेदारी है (देखें गलातियों 6:10; याकूब 1:27)।

मत्ती 6:1-18 में प्रत्येक उदाहरण में यीशु ने विचाराधीन बातों के जारी रहने का पूर्वानुमान लगाया। निर्धनों को सहायता देने के सम्बन्ध में उसने यह नहीं कहा कि ''*यदि* तुम निर्धन को दो,'' बल्कि कहा ''*जब* तू दान करे।'' परन्तु हम दान करने या दूसरों की सहायता करने के सही

ढंग या गलत ढंग को देखते हैं। गलत ढंग इसका लाभ उठाना है, या प्रतीकात्मक अर्थ में कहें तो डौंडी पिटवाना है।

हम पक्का नहीं कह सकते कि तुरही बजवाने की बात सचमुच में थी या बढ़ा चढ़ाकर फंसाने के लिए की गई बात। दान देने से पहले तुरही बजवाने का कोई ऐतिहासिक हवाला नहीं मिलता,[12] पर ऐसी परिस्थिति के विवरण मिलते हैं जब धनवान लोग निर्धनों के लिए पानी की मश्कें[13] खरीदते थे। पानी बेचने वाला निर्धनों को आकर पानी पीने के लिए ज़ोर से आवाज़ देते हुए शोर मचाता था। पानी की कीमत चुकाने वाला व्यक्ति निर्धनों से धन्यवाद लेने के लिए पानी बेचने वाले के पास खड़ा होता था।[14]

दान करते समय तुरही बजवाने वालों की बात पढ़कर आपके ध्यान में कौन आता है? मुझे लगता है कि मेरे दिमाग में वे धनवान लोग आते हैं जो यह सुनिश्चित करने के लिए कि उनके दान के किसी भी काम को अधिक से अधिक प्रचार मिलना चाहिए, विज्ञापन देने वालों को भाड़े पर लेते हैं। वे समाचार पत्रों में अपनी तस्वीरें छपवाते और लोगों का भला करने वाले कहलाते हैं। मैं सोचता हूं कि उनके पास कितना धन है और वे अपने बड़े दानों के लिए कर छूट मांग सकते हैं। फिर मैं अपना मुंह लटका लेता हूं, क्योंकि यीशु ने यह उदाहरण दूसरों का न्याय करने के लिए नहीं, बल्कि अपने मन को जांचने के लिए दिया है। जब मैं दूसरों की सहायता करता हूं तो, तो क्या मैं उनसे धन्यवाद की उम्मीद रखता हूं? यदि मुझे उन से धन्यवाद नहीं मिलता, तो क्या मैं निराश होता हूं? क्या मैं सांसारिक वाह वाह चाहता हूं?

1 कुरिन्थियों 13 में पौलुस ने गलत मंशा से दान दिए जाने की बात की: ''और यदि मैं अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति कंगालों को खिलाऊं ... और प्रेम न रखूं तो कुछ भी लाभ नहीं।'' गलत कारणों से सहायता करने वाले लोगों के बारे में यीशु ने कहा, ''मैं तुम से सच कहता हूं, वे अपना प्रतिफल पा चुके'' (मत्ती 6:2ख)। जो काम वे करते हैं उससे सहायता पाने वाले को लाभ मिलता है, पर इससे सहायता देने वाले को लाभ नहीं मिलता। फिलिप्पस के संस्करण में आयत 2 के अन्त को इस प्रकार अनुवाद किया गया है: ''मेरा विश्वास, उन्हें वह सारा प्रतिफल मिल चुका है, जो उन्हें मिलना था!''

निर्धनों की सहायता कैसे करें (आयतें 3, 4)

तो फिर हमें निर्धनों की सहायता के लिए कैसे देना चाहिए। यीशु ने कहा, ''इसलिए जब तू दान करे, तो जो तेरा दाहिना हाथ करता है, उसे तेरा बायां हाथ न जानने पाए; ताकि तेरा दान गुप्त रहे'' (आयतें 3, 4क)।

कइयों ने इसका अर्थ यह ले लिया है कि हर दान गुप्त ही होना आवश्यक है जिसका किसी दूसरे को पता न चल पाए। कालांतर में मण्डलियों के लिए चन्दे की थैलियों का इस्तेमाल करना आम बात थी। थैलियां घुमाए जाने पर कलीसिया के लोग थैली में बन्द मुट्ठी डाल देते थे। इस प्रकार किसी को पता नहीं चल पाता था कि किसने क्या दिया या दिया भी है या नहीं। औरों ने यह निर्णय लिया है कि यह वचन सिखाता है कि परोपकार के उनके सभी काम गुमनामी में होने चाहिए।[15] जब तक परमेश्वर को श्रेय दिया जाता है, तब तक ऐसा करने में कोई बुराई नहीं है।

परन्तु नये नियम के समयों में हर प्रकार का दान गुप्त नहीं था। यीशु ने निर्धन विधवा के दान

की बात अपने चेलों को बताई (मरकुस 12:41-44)। दूसरे लोगों को बरनबास की उदारता का पता था (प्रेरितों 4:34-37) पौलुस ने मकिदुनिया के लोगों की उदारता का इस्तेमाल कुरिन्थियों को प्रेरित करने के लिए किया (2 कुरिन्थियों 8:1-5; 9:1-5)। ध्यान इस बात पर नहीं था कि दूसरों को पता चल सके कि दान दिया गया है बल्कि प्रशंसा पाने की इच्छा से दिए जाने पर था। जरूरतमंदों की सहायता के लिए बरनबास के दान और वही पहचान जो बरनबास को मिली थी, पाने के एक प्रयास में हनन्याह और सफ़ीरा का ''दान'' देने में अन्तर है (देखें प्रेरितों 4:36-5:8)।

तो फिर क्या इसका अर्थ यह है कि जो कुछ आप दाहिने हाथ से करते हैं उसका आपके बाएं हाथ को पता नहीं चलना चाहिए? यहां थोड़ी हंसी वाली बात लग सकती है। मैं एक कार्टून स्ट्रिप की कल्पना कर सकता हूं। पहले फ्रेम में, दायां हाथ एक निर्धन व्यक्ति को सिक्का दे रहा है, और हाथ कहता है, ''लगता है इससे मदद मिलेगी।'' अगले फ्रेम में, बायां हाथ कह रहा है, ''अरे, दायें हाथ, तू क्या कर रहा है?'' और गम्भीरता के अर्थ में इस पर विचार करें कि बाएं हाथ को कैसे पता चलता है कि दायां हाथ क्या कर रहा है? यह सब जानकारी *दिमाग* से मिलती है। यीशु यह कहने के लिए कि ''जब तू दान करे, तो उस भलाई को जो तूने की है अपने *दिमाग में* न रख। इसे जल्दी से अपने विचारों में से निकाल दे ताकि तू उदार होने या भलाई के काम करने के लिए अपने आपको शाबाश न देने लगे।''

यहां हमें मत्ती 6:1-18 के बड़े विषय का एक विस्तार मिलता है। अब तक हमें इस विचार से प्रभावित हो जाना चाहिए कि हमें दूसरों को दिखाने के लिए अपने धर्म के काम नहीं करने चाहिए। परन्तु जहां कोई दूसरा नहीं जानता, वहां भी ये काम हो सकते हैं और फिर भी ये हमारे दिमाग को ऐसे धर्मी लोग होने पर अपने आपको शाबाश देने के लिए भर सकते हैं। नर्सरी के बच्चों की एक कविता में एक लड़के की बात है जिसने पाई में से प्लम निकालते हुए कहा, ''मैं कितना अच्छा लड़का हूं!'' अपने विचारों में हमें यह नहीं कहना है कि ''हम कितने अच्छे लड़के और लड़कियां हैं!'' मसीही दान की पहचान न केवल आत्मबलिदान है बल्कि इसकी पहचान अपने आपको भुला देना ही है।[16]

जब आप दान वैसे देते हैं जैसे आपको देना चाहिए, ''तब तेरा पिता जो गुप्त में देखता है, तुझे प्रतिफल देगा''[17] (मत्ती 6:4ख)। परमेश्वर ''गुप्त में देखता है'' क्योंकि ''जिससे हमें काम है उसकी आंखों के सामने सब वस्तुएं खुली और प्रकट हैं'' (इब्रानियों 4:13)।[18] परमेश्वर को मालूम है कि आप क्या करते हैं और क्यों करते हैं और किससे करते हैं। यदि आप सही कारणों के लिए सही काम करें तो यीशु ने कहा कि परमेश्वर ''तुम्हें प्रतिफल देगा।''

''तुम्हें प्रतिफल देगा'' शब्द कइयों को परेशान करते हैं। कुछ लोग विरोध करते हैं जिसे वे ''प्रतिफल की प्रेरणा'' कहते हैं। हमें यह कभी नहीं सोचना चाहिए कि कुछ भले काम या कुछ दान करने से हम स्वर्ग में अपने लिए घर खरीद सकते हैं, क्योंकि हमारा उद्धार तो *अनुग्रह* से होता है (रोमियों 6:23; इफीसियों 2:8)। तौभी इस तथ्य पर कि परमेश्वर की आज्ञा मानने वालों को प्रतिफल मिलेगा और परमेश्वर की बात न मानने वालों को दण्ड मिलेगा बाइबल काफ़ी कुछ कहती है (उदाहरण के लिए देखें मत्ती 5:12; 10:42; 25:14-46)।

टीकाकार मत्ती 6:4 के ''प्रतिफल'' पर और कब दिया जाएगा, एक मत नहीं हैं। इस

सम्भावना पर विचार करें कि प्रतिफल का एक त्वरित पहलू, चलता रहने वाला पहलू, और निर्णायक पहलू है। हमारे वचन पाठ में *त्वरित* पहलू के सम्बन्ध में, प्रतिफल मनुष्यों की स्वीकृति से उलट है और इस कारण इसे परमेश्वर की स्वीकृति होगी। (मंच के रूपक में वापस जाते हुए, इसे परमेश्वर की शाबाशी के रूप में विचार करें।) प्रतिफल का *चलते रहने वाला* पहलू यह है कि हम और से और परमेश्वर के निकट आते हैं और उसके जैसे बनते जाते हैं (5:48)। उससे सामर्थ लेकर हम उसके प्रेम के बारे में और अधिक जानने लगते हैं। प्रतिफल का *निर्णायक* पहलू अनन्त जीवन यानी अनन्त युगों तक अपने पिता के साथ जीवन है। मत्ती 25 अध्याय में न्याय के दृश्य में, हम इस प्रकार पढ़ते हैं (ज़रूरतमंदों की सहायता करने और उसके परिणाम पर दिए जाने वाले ज़ोर पर ध्यान दें):

> ''तब राजा अपनी दाहिनी ओर वालों से कहेगा, हे मेरे पिता के धन्य लोगो, आओ, उस राज्य के अधिकारी हो जाओ, जो जगत के आदि से तुम्हारे लिए तैयार किया हुआ है। क्योंकि मैं भूखा था, और तुम ने मुझे खाने को दिया; मैं प्यासा था, और तुम ने मुझे पानी पिलाया, मैं परदेसी था, तुम ने मुझे अपने घर में ठहराया। मैं नंगा था, तुम ने मुझे कपड़े पहिनाए; मैं बीमार था, तुम ने मेरी सुधि ली, मैं बन्दीगृह में था, तुम मुझ से मिलने आए'' (आयतें 34-36)।

सारांश

यूजन पीटरसन ने मत्ती 6 के पहलू अध्याय को इस प्रकार अनुवाद किया है:

> ''भलाई करने की कोशिश करते हुए विशेष रूप से सावधान रहो ताकि तुम इसे अभिनय न बना दो। यह अच्छा मंच हो सकता है, पर परमेश्वर जिसने तुम्हें बनाया है वह इसकी तारीफ़ नहीं करेगा।''
>
> जब तुम किसी के लिए कुछ करते हो, तो अपना ध्यान मत खींचो। तुम ने उन्हें जिन्हें मैं ''कलाकार'' कहता हूं, यकीनन देखा होगा जो किसी के देखने तक भीड़ में तमाशा करते हुए करुणामय दिखाते हुए प्रार्थना सभा और गली के कोने को मंच की तरह बना देते हैं। यह सच है कि उन्हें प्रशंसा मिलती है, पर इससे आगे और कुछ नहीं मिलेगा। जब तुम किसी की सहायता करोगे तो यह मत सोचो कि यह कैसी लगती है। बस खामोशी से और विनम्रता से इसे कर दो ... (एम. एस.)।

गलातियों के नाम पौलुस ने लिखते हुए कहा, ''यदि मैं अब तक मनुष्यों को प्रसन्न करता रहता, तो मसीह का दास न होता'' (गलातियों 1:10)। पौलुस के शब्दों को लें तो हम में से हर एक को अपने आपको पूछना चाहिए कि क्या मैं लोगों की भीड़ की प्रशंसा चाह रहा हूं या परमेश्वर की प्रशंसा। एक लेखक ने कहा है कि ...

> ... धर्म को सबसे बड़ा खतरा इस बात का है कि मन फिराव और आत्मत्याग के द्वारा पुराना जीवन निकालने के बाद यह फिर से वापस आकर पुराने की सेवा में नये रूप में लग जाता है। यह पुराना व्यक्ति है; अन्तर केवल यह है कि अब यह धार्मिक हो गया

है।[19]

यदि आप मेरे जैसे हैं तो आपको ''पुराने व्यक्ति'' से लड़ना पड़ता है जो आज भी दूसरों की प्रशंसा की राह देखता है। विचारों को उसके ऊपर लगाने और केवल उसी की स्वीकृति की चिन्ता करने में परमेश्वर आपकी सहायता करे।

टिप्पणियां

[1]डी. मार्टिन लायड-जोन्स, *स्टडीज़ इन द सरमन ऑन द माउंट,* अंक 2 (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1959), 9. [2]कुछ प्राचीन हस्तलियों का आरम्भ 5:48 के विचार की निरन्तरता का संकेत देते हैं। मत्ती 6:1 ''परन्तु'' के लिए यूनानी शब्द ''विस्तार'' के साथ होता है। [3]6:1-18 में यीशु ने शास्त्रियों और फरीसियों का नाम नहीं लिया पर उसने ''कपटियों'' की बात अवश्य की (आयतें 2, 5, 16)। मत्ती 23 अध्याय में शास्त्रियों और फरीसियों के ऐसे ही पापों की चर्चा करते हुए उसने उसे ''कपटी'' नाम दिया। [4]दि एनेलिटिकल ग्रीक लैक्सिकन (लंदन: सेमुएल बैगस्टर एण्ड सन्स, लिमिटेड, 1971), 191. [5]वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ दि न्यू टेस्टामेंट एण्ड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिटरेचर,* चौथा संस्करण, संशो. व विस्तार, विलियम एफ़. अर्ंट एण्ड एफ़. विल्बर गिंगरिच (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 1957), 84. [6]डी. ए. करसन, ''मत्ती,'' *दि एक्सपोज़िटर'स बाइबल कमैंट्री,* अंक 8 (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: रिजेंसी रेफरेंस लाइब्रेरी, जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1984), 162. [7]उस पाठ का नाम ''गलत कारण के लिए सही काम करना (मत्ती 6:5-18) है।'' [8]विलियम बार्कले, *दि गॉस्पल ऑफ़ मैथ्यू,* अंक 1, दि डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ (एडिनबर्ग: सेंट एंड्रयू प्रैस, 1956), 186. [9]पुराना अंग्रेज़ी शब्द alms लातीनी भाषा से लिया गया है जो यूनानी से लिया गया है। सदियों से *eleemosune* धीरे धीरे ''आम्स'' बन गया। [10]डब्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल एफ़. अंगर एण्ड विलियम व्हाइट, जूनि., *वाइन'स कम्पलीट एक्सपोज़िटरी डिक्शनरी ऑफ़ ओल्ड एण्ड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985), 23.

[11]ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले, *थियोलॉजिकल डिक्शनरी ऑफ़ दि न्यू टैस्टामेंट,* abr., संपा. ग्रेहर्ड किट्टल एण्ड गर्हड फ्रैडरिच; अनु. ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 223. [12]मत्ती 6:2 को उपवासों तथा अन्य अवसरों से पहले तुरहियां बजवाने से जोड़ने के प्रयास किए गए हैं; परन्तु मत्ती 6:2 वाली तुरही किसी सार्वजनिक घटना की घोषणा करने वालों द्वारा नहीं बल्कि दान करने वालों के द्वारा बजवाई जाती थी। [13]फलस्तीन में पानी बहुतायत में नहीं था। सुखे के समय में बाज़ारों में इसे बेचा जाता था। इस पानी को सम्भालकर रखने के लिए पशुओं के चमड़े का इस्तेमाल किया जाता था। संसार के कुछ भागों में चमड़े का इस्तेमाल आज भी हो होता है। [14]राल्फ स्वीट, *मोमेंट्स ऑन द माउंट,* लिविंग वर्ड सीरीज़ (ऑस्टिन, टैक्सस: आर. बी. स्वीट कं., 1963), 42. [15]इस प्रकार के लक्ष्य को रखने के उदाहरण के रूप में लॉयड डग्लस की *मैग्निफिशेंट ओब्सेशन* का इस्तेमाल किया जा सकता है। [16]जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट, *दि मैसेज ऑफ़ द सरमन ऑन द माउंट,* दि बाइबल स्पीक्स टुडे सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1978), 131. [17]KJV में इस वाक्य के अन्त में ''सरेआम'' है। अति प्राचनी हस्तलिपियों में यहां ''सरेआम'' के लिए यूनानी शब्द नहीं है। [18]अनाम वारेन डब्ल्यू. वियर्सबे, *दि बाइबल एक्सपोज़िशन कमैंट्री,* अंक 1 (व्हीटन, इलिनोइस: विक्टर बुक्स, 1989), 27 में उद्धृत। [19]रुडोल्फ यूकन; ई. स्टैनली जोन्स, *दि क्राइस्ट ऑफ़ दि माउंट* (न्यू यॉर्क: अबिंग्डन प्रैस, 1931), 202 में उद्धृत।